अंतरा-शब्दशक्ति

तड़प

(काव्य संग्रह)

श्रीमती मीनाक्षी सुकुमारन

तड़प

(काव्य संग्रह)

मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-59-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ ©मीनाक्षी सुकुमारन

मूल्य:४०.००रुपये

आवरणचित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलूकम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Tadap' by 'Minakshi Sukumaran'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

'तड़प' कवि मन के वो भाव हैं जो बरबस ही उसके कोमल मन से अनायास उभर आते हैं फिर चाहे वो फूलों की टूटी पंखड़ियों को देख, किसी पंछी की कराह, बारिश की टप टप, बच्चे का बिलखना, किसी को भूखा, प्यासा देख तड़प या फिर समाज की कोई भी अचंभित, दहला या रोंगटे खड़ी कर देने वाली घटना।

"तड़प मन के भीतर को वो भाव हैं जो समय असमय शब्दों में " उभर आते हैं। ऐसे ही कुछ भावों की अभिव्यक्ति है ये पुस्तक जो मन के गहरे से उठ शब्दों में बहती गयी।

आशा है आप सभी का आशीर्वाद मन के अंतस से उपजी इस तड़प को अवश्य ही मिल पायेगा।

आप के आशीर्वाद की अपेक्षा में
मीनाक्षी सुकुमारन

अनुक्रमणिका

1. बेनाम सी टीस	5
2. पर्यावरण	6
3. वार पर वार	7
4. समझौता	8
5. उगता सूरज	9
6. कुछ ज़ख्म छुपाये हैं	10
7. तड़प	11
8. शब्द	12
9. कसक	13
10. रिश्ता	14
11. वेदना	15
12. प्यार के फूल	16

बेनाम सी टीस

बहुत याद आते हैं
वो दिन घर, गली, मोहल्ले
जिनमें खिलती, मुस्कुराती,
महकती थी इंसानियत
होती थी प्रीत प्रेम की बातें,..

अब तो हैं बस शहर, नगर,
ऊंची ऊंची इमारतों में
सो चुकी इंसनियत,
प्रेम प्रीत की बातें,

बस रहती है
बेनाम सी टीस
अनकही सी खामोशी
बिखरी रिश्तों में,..

न कोई अपना
न कोई पराया
बस खोखले मन
करते दिखावे पहन मुखोटे,

छलते जितना खुद को
उतना ही बाहर
यूँ लगा बस सूना सा पहरा
हर नगर सिमटा सिसकता तन्हाई में,

यूँ बहुत याद आते हैं
वो घर कच्चे
पर रिश्ते पक्के ।।

पर्यावरण

जब हो मन
जब हो तन
जब हो विचार
जब हो सोच
सब कलुषित
जब हो नेकी वदी
जब हो वेदी नेकी
जब हो सही गलत
जब हो गलत सही
जब हो पाप पुण्य
जब हो पुण्य पाप
जब हो धर्म अधर्म
जब हो अधर्म धर्म
सब कलुषित
कैसे हो फिर पर्यावरण
स्वच्छ, निर्मल, पोषित?
जो इंसान देगा प्रकृति को
वही तो पायेगा बदले में।।

वार पर वार

एक घर
एक छत
एक समाज
एक नगर
एक देश
में जहाँ दो जन
रह नहीं पाते साथ
देखो और सीखो
इन पशु पक्षियों की
चौपाल से
जहाँ हिरण, मोर, मुर्गी, कबूतर,
सब हो साथ
मचा रहे धमा चौकड़ी
देते प्रेम प्रीत का संदेश
और वहीं
इंसां बना जानवर
करता सिर्फ वार पर वार।।

समझौता

कभी छुपे आँसूओं से
कभी रुँधी दबी आवाज़ से
कभी तेज़ धड़कनों से
कभी सिसकती आहों से
कभी हार से
कभी टूटन से
कभी मौन से
कभी खुली पलकों से
कभी मूंद ली पलकों से
कभी अधूरे सपनों से
कभी अनकहे जज़्बातों से
कभी अपनोँ से
कभी खुद से
समझौता
ही तो करते हैं
जीने भर को
सिमट कर बिखरने के लिये
बिखर कर सिमटने के लिये।।

उगता सूरज

उगते सूरज से ही शुरू हो
आस भराउजला दिन
भर जाए एक नई ऊर्जा
एक नये विश्वास की
एक नई चहक
एक नई मुस्कान की
एक नई आशा
एक नई जीत की
भोर का उजला स्पर्श
यूँ कर देता दूर अंधियारे निराशा के
और भर देता एक नया उल्लास
जीवन को जीने का,
पूजे जैसे हर कोई उगता सूरज को
देखे जैसे हर कोई राह उगते सूरज की
कोई न देखे ढलता सूरज
और न ही चाहे फैला अंधियारा
वैसे ही
जब चमके है रुतबा
इंसा के नाम का
हर कोई हो लेता साथ
क्योंकि उगता सूरज है वो
पर दे न कोई न साथ
जब हो तन्हा मजबूर वो इंसा
क्योंकि अब ढलता सूरज है वो
हो चाहे नियम प्रकृति के
या पहलू ज़िन्दगी के
उगता सूरज सदा ही रहे सराहनीय
ढलता सूरज सदा ही रहे तन्हा।।

कुछ ज़ख्म छुपाये हैं

यूँ तो ये लब सदा ही मुस्कुराते से हैं।
यूँ तो ये आँखें सदा ही चमकती सी हैं।
यूँ तो ये बोल सदा ही खनखनाते से हैं।
यूँ तो ये दिल सदा ही बहलाता सा है।
क्योंकि
कुछ ज़ख्म छुपाये हैं
अपने से भी हमने
तो कैसे करते
ये लब
ये आँखें
ये बोल
ये दिल बयां उनको
कुछ अधूरी हसरतें
कुछ अधूरे सपने
कुछ अधूरे रिश्ते
कुछ अधूरे हम
कुछ अधूरे अश्क
कुछ अधूरी खुशी
तो कैसे करते
ये लब
ये आँखें
ये बोल
ये दिल बयां उनको
कुछ ज़ख्म जो छुपाये हैं
कभी खुद से
कभी ज़माने से हर किसी ने
कभी अपने लिए, कभी अपनो के लिए ।।

तड़प

है ये तड़प कैसी मेरे भीतर
सुलगते अरमानों की
सुलगते मसलों की
सुलगते मतभेदों की
सुलगते बेवजह विषयों की
सुलगते बिफरते बिलखते परिवारों की
जल रहा देश सारा
फिर भी कोई नहीं जो तारे
इंसानियत को इस गहन तपन से
नित नए आरक्षण के बवाल
नित नए दंगों की लहर
नित नए घोटाले
नित नए आक्रमण सीमा पर
नित नया ख़ौफ
नित नया रुदन
नित नया बिखराव
नित नयी तपन
पर फिर भी चिर निंद्रा
सोती सत्ता हमारी
नित नए तेवरों से हो प्रयास
लुभाने का देश और जनता को जितना
उतनी ही बढ़ती जाए,
ये वेदना
ये कष्ट
ये तड़प
नित नए ।।

शब्द

शब्द ही मरहम
शब्द ही जख्म
शब्द ही तीर
शब्द ही पीर
शब्द ही मिठास
शब्द ही खटास
शब्द ही आईना
शब्द ही छलावा
शब्द ही मेल
शब्द ही खेल
शब्द ही मिलन
शब्द ही बिछुड़न
शब्द ही फूल
शब्द ही शूल
शब्द ही मेला
शब्द ही तन्हाई
शब्दों का ही बस ये संसार
जिस से जुड़े या बिखरे रिश्ते ।।
जिस से मिले या टूटे दिल।।

कसक

दो पल प्यार के
दो पल इकरार के
दो पल साथ के ही तो मांगे थे
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

कब से समेटे रखे थे
अरमान दिल के पिंजरे में
ज़रा –सा उड़ना ही तो
चाहा था दिल ने
चाहत के आसमां में
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

भर भर देता है
खुशियाँ सब को ऐ खुदा
एक ज़रा सी मिलन की
मुस्कराहट ही तो मांगी थी
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

अब क्या करें ऐ ज़िन्दगी
गिला तुझ से भी
जब रिश्तों की भीड़ में
कोई एक अपना हमसाया न हुआ
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

इस से बड़ी सज़ा क्या थी
बेबसी की सामने था तू
और लबों से पुकारा न गया
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

रुसवा न हो चाहत
ये सोच कभी
होठों पर नाम लाया न गया
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

बेबसी दामन भिगोती रही
चाहत आहें भरती रही
फिर भी दिल याद करता
रहता तुझे हर पहर हर पल
ऐ ज़िन्दगी
क्या ये भी न गवारा हुआ तुझ से ....

आस और साँस का
है बंधन ये अनमोल
हो सके तो करना रहम
ऐ ज़िन्दगी और कर लेना गवारा
दिल की खामोश हसरतों की दुआ
और दे देना मुलाकात का
चाँद इस बरस ईद पर||

रिश्ता

सूरज से किरणों का
चाँद से चांदनी का
घटा से सावन का
आसमां से धरती का
रात से दिन का
फूलों से खुशबू का
ओस से आंसुओं का
हवा से सिरहन का
दुआ से ईश्वर का
जब कोई न पूछे ,जांचे ,परखे
रिश्ता इन का
फिर क्यों सताती है चिंता
ज़माने को की तेरा मेरा
रिश्ता क्या है ....
है पावन प्रीत ये बहती
दिल से दिल तक
फिर क्यों कर हो इख्तियार
ज़माने को देने को नाम इसे ??

वेदना

बंद किताब से
सूखे फूल से
मंद-मंद ताकती
हसरतें दिलों की
कभी मजबूर
कभी सिसकती
कभी तड़पती
घायल सपनों का बोझ
लादे कन्धों पर
गिरते-पड़ते कदम लिए
मस्त अपनी ही धुन में ये ज़िन्दगी
है कौन सी राह करती इंतज़ार
जीवन के किस पथ पर
हर चेहरा भीड़ में लगे मुखोटा पहने
नहीं बोलता इंसानी जबान कोई
बने सब मतलब के सवाली
ऐसे में किताब में
समाया सूखे फूल-सा
झांकता यह दिल
मासूम सपनो को
सहलाता - बहलाता
दूर भीड़ से दूर
तन्हा बिल्कुल तन्हा
हर हाल में
मुस्कुराता आहें भरता
बेरंग मासूम दिल ये अकेला !!

प्यार के फूल

आओ रोंप दें कुछ
प्यार के फूल
पत्थर की सरज़मीन पर-
कुछ सांसे तो बच जाएँ
दम तोड़ने से
इस सर!! ज़मीन पर-

आओ रोंप दें कुछ
फूल मुस्कुराहटों के
दिल की सरज़मीन पर-
कुछ तो निकल जाएँ
कांटे नफरतों के
इस सर!! ज़मीन पर-

आओ कुछ तो बोयें ऐसा
बबूल के दिलों में खिल
जाएँ फूल गुलाब के
महक जाये जीवन फिर
इस सर!! ज़मीन पर-,..

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती मीनाक्षी सुकुमारन

जन्मतिथि - 18 सितम्बर 1967 (नई दिल्ली)

माता-पिता - श्रीमती कान्ता वधवा - श्री बद्रीनाथ वधवा

पति - श्री सी.एन.सुकुमारन

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (इग्लिश)

निवास स्थान - डी.214, रेल नगर प्लाट नं. ए 1
सेक्टर 50, नोएडा (यु.पी.) 201301

फोन नं. - 9810862418

मेल आई.डी. - virgo67@ymail.com

संप्रति - कवयित्री/लेखिका

विधा - छंद मुक्त (स्वतंत्र भाव) कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, लेख आदि

रुचि - कविता लिखना, पुराने गीत (लता, मुकेश, रफ़ी), जगजीत सिंह, पंकज उदास की गज़लें सुनना बेहद प्रिय है।

प्रकाशन - निजी काव्य संकलन :- 1. भाव सरिता, 2. अहसास ऐ अल्फाज़ प्रकाशित। काव्य संग्रह 'तरंग' शीघ्र ही अवलोकित।
- साँझा संग्रह :- 2014 से 2018 अब तक 37 काव्य संग्रह, 6 कहानी व 2 समीक्षा, 1 विचार मंथन संकलन प्रकाशित।
- गुफ्तगू हिन्दुस्तानी साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका एवं महिला विशेषांक में 'परिशिष्ट'।
- सृजन समीक्षा (केन्द्रीय रचनाकार के रुप में हम प केन्द्रित)
- व्यक्तित्व कृतित्व टू मीडिया जून विशेषांक लोकार्पित।

सम्मान/पुरस्कार- साहित्य गरिमा 2014, साहित्य गौरव 2014, नारी गौरव 2015, काव्य गौरव 2015, माँ शारदे उत्कर्ष सम्मान 2015,दीपशिखा 2016, शब्द कलश 2016, साहित्य सम्मान 2016, युग सुरभि 2016, नारी सागर 2016, श्रेष्ठ शब्द शिल्पी 2016, राष्ट्रीय स्त्री शक्ति 2016, साहित्य गौरव आदि अनेकों सम्मान से सम्मानित।
- विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 'विद्यावचस्पति' उपाधि से सम्मानित।
- स्पेशल जूरी अवार्ड 2018, डायमंड एचीवर अवार्ड 2018, सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान 2018
- राष्ट्र गौरव अवार्ड 2018, राष्ट्रीय नारी गौरव अवार्ड 2018, भारतीय गौरव अवार्ड 2018,
- द मीडिया साहित्य सम्मान 2018 एवं अनेंको सम्मान से सम्मानित।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-59-9

मूल्य- 40/-